ध्यानशतक (फोल्डर नं. ००१११६)

मुख्य टाइटल

अनुक्रमणिका ---------- ५
प्रकाशकीय ---------- ९
भूमिका---------- ११
प्रस्तावना ---------- २५
ध्यानशतक ---------- ५७
मङ्गलाचरण (गाथा १)---------- ५७
ध्यान का लक्षण (गाथा २) ---------- ५८
ध्यान का काल तथा स्वामी (गाथा ३) ---------- ५९
ध्यान के भेदः उद्देश्य एवं फल (गाथा ४-५)---------- ६०
आर्त ध्यान के भेद---------- ६१
(१) अनिष्ट संयोग (गाथा ६) ---------- ६१
(२) आतुर चिन्ता (गाथा ७)---------- ६२
(३) इष्ट वियोग (गाथा ८) ---------- ६३
(४) निदान चिन्तन (गाथा ९)---------- ६३
आर्त ध्यान का कारण और परिणाम (गाथा १०)---------- ६४
मुनि के आर्त ध्यान की सम्भावना एवं निराकरण (गाथा ११-१२) ---------- ६५
आर्त ध्यान संसार का कारण (गाथा १३)---------- ६६
आर्त ध्यानी की लेश्याएँ (गाथा १४) ---------- ६६
आर्त ध्यानी के परिचायक लिङ्ग (गाथा १५)---------- ६७
आर्त ध्यानी के परिचायक लिङ्ग (गाथा १६-१७)---------- ६८
गुणस्थान की दृष्टि से आर्त ध्यानी (गाथा १८) ---------- ७०
रौद्र ध्यान के भेद---------- ७०
(१) हिंसानुबन्धी (गाथा १९)---------- ७०
(२) मृषानुबन्धी (गाथा २०) ---------- ७२
(३) स्तेयानुबन्धी (गाथा २१)---------- ७३
(४) विषयसंरक्षणनुबन्धी (गाथा २२)---------- ७४
स्थान की दृष्टि से रौद्र ध्यानी (गाथा २३)---------- ७५
रौद्र ध्यान के कारण और परिणाम (गाथा २४)---------- ७५
रौद्र ध्यानी की लेश्याएँ (गाथा २५)---------- ७६
रौद्र ध्यानी के दोष (गाथा २६) ---------- ७६
रौद्र ध्यानी के अनुमापक लिङ्ग (गाथा २७) ---------- ७७
धर्म ध्यान के प्ररूपक द्वारों का नामनिर्देश (गाथा २८-२९)---------- ७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्म ध्यानोपयोगी भावनाएँ – नामनिर्देश (गाथा ३०) ---------- ७८
(१) ज्ञान भावना (गाथा ३१) ---------- ७८
(२) दर्शन भावना (गाथा ३२) ---------- ७९
(३) चारित्र भावना (गाथा ३३) ---------- ८०
(४) वैराग्य भावना (गाथा ३४) ---------- ८०
धर्म ध्यान योग्य देश (गाथा ३५-३६) ---------- ८२
धर्म ध्यान योग्य स्थान (गाथा ३७) ---------- ८३
धर्म ध्यान काल (गाथा ३८) ---------- ८३
धर्म ध्यान योग्य आसन (गाथा ३९) ---------- ८४
धर्म ध्यान हेतु योग-समाधान अनिवार्य, देश-काल-आसन
नियत नहीं (गाथा ४०-४१) ---------- ८४
धर्म ध्यान के आलम्बन (गाथा ४२-४३) ---------- ८५
धर्म ध्यान व शुक्ल ध्यान निग्रह क्रम (गाथा ४४) ---------- ८७
धर्म ध्यान के ध्यातव्य- नामनिर्देश (गाथा ४५) ---------- ८८
(१) आज्ञा विचय (गाथा ४६-५०) ---------- ८८-९०
(२) अपाय विचय (गाथा ५१) ---------- ९१
(३) विपाक विचय (गाथा ५२) ---------- ९२
(४) संस्थान विचय (गाथा ५३-६२) ---------- ९३-९६
धर्म ध्यान का श्रेष्ठ ध्यातव्य – स्वसमय (गाथा ६३) ---------- ९७
धर्म ध्यान के ध्यातामुनि का स्वरूप (गाथा ६४) ---------- ९८
धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान के (गाथा ६५-६६) ---------- ९८-९९
ध्याता की विशेषता ---------- १०१
धर्म ध्यानी की लेश्याएँ (गाथा ६७-६८) ---------- १०१
धर्म ध्यानी के ज्ञापक लिङ्ग (गाथा ६९) ---------- १०३
शुक्ल ध्यान के आलम्बन (गाथा ७०) ---------- १०३
ध्यान की प्रक्रिया ---------- १०४
मन-वचन-काय निरोध – शैलेशी केवली (गाथा ७१-७७) ---------- १०४-१०६
शुक्ल ध्यान के भेद ---------- १०७
(१) पृथक्त्व वितर्क विचार (गाथा ७८-७९) ---------- १०७
(२) एकत्व वितर्क अविचार (गाथा ८०-८१) ---------- १०९
(३) सूक्ष्मक्रिया अनिवृत्ति (गाथा ८२) ---------- १११
(४) व्युच्छिन्न क्रिया अप्रतिपाति (गाथा ८३) ---------- १११
शुक्ल ध्यान के भेदों में योग-निरोध की स्थिति (गाथा ८४) ---------- ११२
छद्मस्थ और केवली के ध्यान की विशेषता (गाथा ८५-८७) ---------- ११३
शुक्ल ध्यान भावित ध्याता की चार अनुप्रेक्षाएँ (गाथा ८८-८९) ---------- ११४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुक्लध्यान और लेश्या (गाथा ९०-९३) ---------- ११७
शुक्ल ध्यान के लिङ्ग ---------- ११९
१. अव्यथा २. असम्मोह ३. विवेक ४. व्युत्सर्ग (गाथा ९४-९५) ---------- ११९
धर्म ध्यान एवं शुक्ल ध्यान के फल की तुलना (गाथा ९६-९७) ---------- १२०
ध्यान से कर्मक्षय की प्रक्रिया (गाथा ९८-१०३) ---------- १२०-१२२
ध्यान का इहलौकिक फल (गाथा १०४-१०५) ---------- १२३
ध्यान का उपसंहार तथा ग्रन्थकर्त्ता नामनिर्देश (गाथा १०६-१०७) ---------- १२३
सन्दर्भ ग्रन्थ सूची ---------- १२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org